''तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं''

मरकुस 12:28-34

यीशु की पृथ्वी की सेवकाई के अंतिम सप्ताह का मंगलवार प्रश्नों का बड़ा दिन था।[2] उसके शत्रु उसे फंसाने के प्रयास में एक के बाद एक प्रश्न लेकर आ रहे थे। यह प्रवचन उस दिन उसके विरोधियों द्वारा पूछे गए अंतिम प्रश्न के बारे में है।

मत्ती का वृत्तांत (मत्ती 22:34-40) यह स्पष्ट करता है कि प्रभु को फंसाने की उम्मीद से, फरीसी इस प्रश्न का समर्थन कर रहे थे। मैं उन्हें यह बताने की कोशिश करते हुए कि आगे क्या पूछना है, शोर मचाते हुए देख सकता हूं। प्रश्न लेकर आने के बाद उन्होंने विचार किया कि प्रश्न कौन पूछेगा। एक ओर खड़े यीशु को देखते मैं यरूशलेम के सबसे तेज़-तर्रार शास्त्री की कल्पना कर सकता हूं। हो सकता है कि दूसरों ने कहा हो, ''यह बात भी सही है। चलो *इसी को* प्रश्न पूछने के लिए लगाते हैं।''[3] जो बात उन्होंने नहीं समझी, वह यह थी कि यह आदमी सदूकियों को दिए गए यीशु के पहले एक उत्तर के समय उससे प्रभावित हो चुका था (देखें मरकुस 12:28क; लूका 20:39)।

राज्य से दूर नहीं-उस समय

शास्त्री का प्रश्न

इस घटना के मरकुस के वृत्तांत से इस आदमी के एक विशेष गुण का पता चलता है। वह गुण जिसकी मसीह ने सराहना की। ''और शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें [यीशु और सदूकियों को] विवाद करते सुना और यह जानकर कि उस ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया; उस से पूछा, सब से मुख्य आज्ञा कौन सी है?'' (मरकुस 12:28)।

रब्बियों ने पुराने नियम के शास्त्र की आज्ञाओं की गिनती की थी और उनके अनुसार ये आज्ञाएं 613 थीं। इन में से साठ प्रतिशत के लगभग आशाएं नकारात्मक और चालीस प्रतिशत के लगभग सकारात्मक थीं। इतनी सारी आज्ञाओं को याद रखने के बजाय उन्होंने कुछेक मुख्य आज्ञाओं पर ध्यान केन्द्रित करने और शेष को इन से जोड़ने का निर्णय लिया था। इससे सही और गलत के प्रश्नों का निर्णय करना आसान हो जाता था। इसलिए वे बहस करते थे कि ''सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है?''

यीशु का उत्तर

पहले भी यीशु से यह प्रश्न पूछा गया था (लूका 10:25-28) और उसका उत्तर अब भी वही था। उसने कहा, ''सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है, और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे मन से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना'' (मरकुस 12:29, 30)। मसीह व्यवस्थाविवरण 6:4, 5 से उद्धृत कर रहा था।

प्रश्न पूछने वालों ने सबसे बड़ी आज्ञा के बारे में नहीं पूछा था, परन्तु यीशु ने उसका भी उत्तर दे दिया: ''दूसरी यह है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना: इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं'' (मरकुस 12:31क)। यह उद्धरण लैव्यव्यवस्था 19:18 से लिया गया था। प्रभु ने निष्कर्ष निकाला, ''इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं'' (मरकुस 12:31ख)।

शास्त्री का उत्तर

हम यीशु के उत्तर के बाद होने वाली बातचीत पर ध्यान लगाना चाहते हैं। यहां तक, उस मंगलवार, मसीह द्वारा अपने शत्रुओं को उत्तर देने के बाद उन्होंने या तो अपना बचाव करने की कोशिश की या चुपके से खिसक गए। प्रश्न पूछने वाले इस आदमी ने इनमें से कोई भी बात नहीं की:

> शास्त्री ने उससे कहा; हे गुरु, बहुत ठीक! तू ने सच कहा, कि वह एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं। और उससे सारे मन और सारी बुद्धि और सारे प्राण और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमों और बलिदानों से बढ़कर है (आयतें 32, 33)।

कई बार हम यह प्रभाव छोड़ते हैं कि पुराने नियम में केवल बाहरी मामलों से सम्बन्धित नियमों का ही ध्यान रखा जाता था। पुराने नियम में ऐसे नियमों पर ज़ोर दिया गया था। पर, पुरानी व्यवस्था में मन पर भी ज़ोर दिया गया था (देखें 1 शमूएल 16:7; नीतिवचन 23:7; यहेजकेल 18:31)। परमेश्वर की आज्ञाकारिता मन से होनी आवश्यक थी, वरना यह स्वीकार्य नहीं होती थी (देखें व्यवस्थाविवरण 30:2)। इसमें वे बलिदान भी थे, जिन्हें करने की इस्राएलियों को आज्ञा दी गई थी। जब राजा शाऊल ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी और बलिदान भेंट करके ''इसे सुधारने'' की कोशिश की थी, तो शमूएल ने उसे बताया था, ''सुन, [आज्ञा] मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है'' (1 शमूएल 15:22ख)। पवित्र शास्त्र का अध्ययन करते हुए इस शास्त्री ने इस महान सच्चाई को पढ़ा था। मरकुस ने लिखा है कि ''यीशु ने देखा कि उस ने समझ से उत्तर दिया'' (मरकुस 12:34क)।

यीशु का अवलोकन

प्रभु ने प्रश्न पूछने वाले को टटोला और उसे देखकर पसन्द किया-वैसे ही जैसे उसने

धनी हाकिम को देखकर उससे प्रेम किया था (मरकुस 10:21)। फिर यीशु ने कौतुहल उत्पन्न करने वाली यह बात कही: ''तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं'' (मरकुस 12:34ख)। मसीह का प्रचार था, ''... स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (मत्ती 4:17), पर उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि शास्त्री राज्य की स्थापना के निकट था, बल्कि उसके कहने का स्पष्ट अर्थ यह था कि उस आदमी को मसीहा के राज्य की प्रकृति के बारे में कुछ समझ पहले से ही थी। हो सकता है कि वह आदमी मसीह को मसीहा के रूप में ग्रहण करने के बहुत निकट हो। विलियम बार्कले ने लिखा है, ''उससे तू बहुत आगे निकल गया है। क्या तू और आगे चलकर मेरे ढंग को स्वीकार नहीं करेगा? कहते हुए यीशु की आंखों में प्रेम और स्नेह दिखाई दिया।''[4]

कहानी का अन्त इन शब्दों के साथ होता है: ''और किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ'' (मरकुस 12:34ग)। परन्तु मुझे यीशु की बात कि **''तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं''** पर कुछ समय बिताना अच्छा लगेगा।

राज्य से दूर नहीं-आज

वह शास्त्री **राज्य**[5] की स्थापना से पहले रहता था, जबकि हम इसकी स्थापना के बाद के समय में रहते हैं[6]–पर क्या यीशु के शब्द कुछ आज के बारे में नहीं बताते? आत्मिक अर्थ में, इन तीन स्थानों पर विचार करें, जिनमें लोग हो सकते हैं: कुछ लोग ''राज्य से दूर नहीं'' हैं; ''राज्य **निकट**[7]'' है, उनकी स्थिति के वर्णन का एक और ढंग है। यदि वह निकट है, तो दूसरे लोग राज्य से **दूर**[8] होंगे। दोनों ही वाक्यांशों का अर्थ है कि कुछ लोग राज्य **में**[9] हैं।

हम यह कह सकते हैं कि **''दूर''** की श्रेणी वाले कुछ लोग यहां हैं। साधारण तौर पर, जो राज्य से दूर होते हैं, वे आत्मिक बातों में दिलचस्पी नहीं लेते। वास्तव में सुनने वालों में से अधिकतर लगभग **राज्य में** ही हैं।[10] स्पष्ट है कि कुछ लोग जो यहां हैं, वे **निकट** हैं। शायद वे बपतिस्मा लेने का निर्णय नहीं ले पा रहे हैं। अभी मेरा विशेष ध्यान उनकी ओर है, जो निकट हैं।

राज्य की प्रकृति

आगे बढ़ने से पहले, हमें इस बात को समझना आवश्यक है कि जब हम **राज्य** कहते हैं तो इसका क्या अर्थ होता है। ''राज्य'' शब्द का अर्थ लोगों के एक समूह के लिए है, जो मसीह को राजा के रूप में मानते हैं अर्थात ऐसे लोग, जिन्होंने उसके अधिकार को मान लिया है।[11] पौलुस ने लिखा है कि मसीही बन जाने पर परमेश्वर हमें ''अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में'' पहुंचा देता है (कुलुस्सियों 1:13)। यूहन्ना ने लिखा है, ''[परमेश्वर ने] हमें एक राज्य बना दिया'' (प्रकाशितवाक्य 1:6) है।

लोगों के समूह को जिससे राज्य बनता है, नये नियम में कई और नामों से जाना जाता है। हम में से अधिकतर लोगों के लिए परिचित एक शब्द मत्ती 16 में मिलता है। पतरस

द्वारा अच्छा अंगीकार करने के बाद, यीशु ने उसकी सराहना करते हुए कहा था ''... मैं इस पत्थर [वह सच्चाई जिसका पतरस ने अंगीकार किया था] पर *अपनी कलीसिया* बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (आयत 18)।[12] यीशु ने एक इमारत के निर्माण का रूपक इस्तेमाल किया।[13] अगली आयत में, उसने एक बन्द दरवाज़े का, जिसे एक कुंजी के साथ खोला जाना था, संकेत देते हुए इस उदाहरण को जारी रखा। उसने पतरस से कहा, ''मैं तुझे स्वर्ग के *राज्य* की कुंजियां दूंगा'' (आयत 19क)। यह इस प्रेरित को दी गई प्रतिज्ञा थी कि उसी के द्वारा सबसे पहले सुसमाचार सुनाया जाएगा, जिससे पापियों के लिए कलीसिया में आने का ''द्वार खुल'' जाएगा।[14] परन्तु जिस सच्चाई को मैं आपको दिखाना चाहता हूं, वह यह है कि इस पद में यीशु ने ''कलीसिया'' और ''राज्य'' शब्दों को एक-दूसरे के स्थान पर अदल-बदलकर इस्तेमाल किया। यानी **राज्य में** होने का अर्थ **कलीसिया में** होना है।[15]

''कलीसिया'' शब्द यूनानी के *एक्कलेसिया* (ekklesia) से लिया गया है, जिसका मूल अर्थ ''बुलाए हुए'' है। यह शब्द उन लोगों के लिए इस्तेमाल होता है, जिन्हें संसार में से यीशु मसीह के साथ एक नये सम्बन्ध में बुलाया गया है। यह प्रेरितों के काम तथा पत्रियों में लोगों के इस विशेष समूह के लिए इस्तेमाल होने वाला सबसे प्रचलित शब्द है (उदाहरण के लिए, देखें प्रेरितों 5:11; 8:1, 3; 9:31; रोमियों 16:1; 1 कुरिन्थियों 1:2)।

लोगों के इसी समूह के लिए एक और शब्द ''देह'' का इस्तेमाल किया जाता है। इफिसियों 1:22, 23 में पौलुस ने लिखा है कि परमेश्वर ने ''सब कुछ [यीशु के] पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।'' पौलुस ने ''कलीसिया'' और ''देह'' शब्दों का इस्तेमाल एक-दूसरे के स्थान पर अदल-बदलकर किया। ''कलीसिया ... उसकी देह है।'' कुलुस्सियों 1:18 में उसने इन शब्दों को उलटा कर दिया: ''वही देह अर्थात कलीसिया का सिर है।'' इसलिए, **कलीसिया में** होना **देह में** होना ही है।[16]

''देह'' शब्द का इस्तेमाल यह ज़ोर देने के लिए किया जाता है कि एक इकाई के रूप में राज्य/कलीसिया के लोग कैसे कार्य करते हैं। जैसे शारीरिक देह के कई अंग (जैसे भुजाएं, टांगें, हाथ और पांव) होते हैं, वैसे ही मसीही लोग मसीह की देह (1 कुरिन्थियों 12:27) के ''अंग'' (काम करने वाले भाग) हैं-जिनका ''सिर'' मसीह है (कुलुस्सियों 1:18)।

मैं एक अन्तिम वाक्यांश का उल्लेख करता हूं, जिसमें उस सम्बन्ध पर ज़ोर दिया गया है, जो **राज्य** पर *राजा* और **देह** के *सिर के साथ* हमारा है: ''**मसीह में**'' वाक्यांश।[17] उद्धारकर्त्ता के साथ हमारे निकट सम्बन्ध को दर्शाने के लिए ''मसीह में'' वाक्यांश पौलुस का पसन्दीदा था। दो प्रतिनिधि पद इस प्रकार हैं: ''... उसी [परमेश्वर] की ओर से तुम *मसीह यीशु में* हो'' (1 कुरिन्थियों 1:30क); ''सो ... जो *मसीह यीशु में* हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं'' (रोमियों 8:1)।[18] मसीही बनने पर हम मसीह को ''पहन'' लेते हैं। (देखें रोमियों 13:14; गलातियों 3:27)।

''मसीह में'' होना राज्य, कलीसिया या देह में होने के समान है। शाऊल जब

कलीसिया को सता रहा था (प्रेरितों 8:1-3; फिलिप्पियों 3:6), तो वह **मसीह** को ही सता रहा था (प्रेरितों 22:8)। **मसीह** को **देह** से अलग करना असम्भव है। एक सरल (और थोड़े से असंगत) उदाहरण का इस्तेमाल करें, यदि मैंने एक गोली खाई हो, तो मैं कह सकता हूं कि गोली *मुझ में* या *मेरी देह में* थी।

राज्य की आशिषें

राज्य/कलीसिया/देह/मसीह में होना कितना आवश्यक है? इफिसियों 1:3 पढ़ें: ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें *मसीह में* स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है।'' पौलुस ने ''**सब प्रकार की आशीष**''[19] शब्द का इस्तेमाल किया-न ''सब आत्मिक आशिषें,'' न ''लगभग हर आत्मिक आशीष'' बल्कि **सब प्रकार की आत्मिक आशीष।** इसके अलावा उसने कहा कि ये आशिषें ''**मसीह में**'' हैं। इसलिए वे **कलीसिया, राज्य, देह** *में* मिलती हैं।

इन शब्दों के सम्बन्ध में, जिनका ऊपर नाम दिया गया है, मैं दो-तीन आशिषों की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं: एक आशीष यह है कि मसीह में, हमें अपने पिछले पापों से **छुटकारा**[21] मिलता है। कुलुस्सियों 1:13 पर एक बार फिर ध्यान दें, इस बार आयत 14 भी जोड़ लें: ''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिस में हमें *छुटकारा* अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है।'' यह छुटकारा मसीह में यानी **देह अर्थात कलीसिया अर्थात राज्य** में मिलता है।

यह कहने का कि हमें अपने पिछले पापों से छुटकारा मिला है, एक और ढंग यह कहना है कि हमें उन पापों से *उद्धार मिला* है। **देह, कलीसिया** में हमें यीशु के लहू के द्वारा **उद्धार**[21] मिलता है। इफिसियों 5 खोलें, जहां पौलुस ने मसीह और उसकी कलीसिया के बीच उसके सम्बन्ध की तुलना एक पुरुष और उसकी पत्नी के बीच सम्बन्ध से की है। 23 और 25 आयतों पर विशेष रूप से ध्यान दें:

> क्योंकि पति, पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही *देह का उद्धारकर्त्ता* है (आयत 23)।
>
> हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी *कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया* (आयत 25)।

यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं, तो हमें **देह** में होना आवश्यक है अर्थात यदि हम यीशु के बलिदान का लाभ उठाना चाहते हैं, तो हमें **कलीसिया** में होना आवश्यक है।

छुटकारा और उद्धार पाने को कहने का एक और ढंग यह है कि हम **परमेश्वर की सन्तान** हैं।[22] गलातियों 3:26, 27 कहता है, ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।'' ''मसीह में'' बपतिस्मा लेने पर

हम ''मसीह को पहन'' लेते हैं, और ''परमेश्वर की सन्तान'' बन जाते हैं। पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को लिखा था कि ''यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं'' (2 कुरिन्थियों 5:17)।

राज्य/कलीसिया/देह/मसीह **में** होने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि हमें **सब प्रकार की आत्मिक आशिषें** मिली हैं।[23] इसका अर्थ है कि हमें पिछले पापों से **छुटकारा** मिला है अर्थात हमें **उद्धार** मिला है। इसका अर्थ है कि हम **परमेश्वर की सन्तान** हैं। राज्य/कलीसिया/देह/मसीह में प्रवेश करने वालों को मिलने वाली आशिषों को इफिसियों 2:12, 13 में अच्छे ढंग से संक्षिप्त किया गया है:

> तुम लोग उस समय[24] मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे। पर अब तो मसीह यीशु में[25] तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो।

दूसरी ओर, राज्य/कलीसिया/देह/मसीह से **दूर** होने का क्या अर्थ है? यदि आप इस स्थिति में हैं, तो इसका अर्थ है कि आप पिछले पापों से **छुटकारा** पाने से दूर हैं; आप **उद्धार** से दूर हैं। आप **परमेश्वर की सन्तान** होने से दूर हैं।

राज्य/कलीसिया/देह/मसीह के **निकट** होने का क्या अर्थ है। यदि आपकी यह स्थिति है, तो इसका अर्थ यह है कि आप अपने पिछले पापों से **छुटकारे** *के निकट* हैं; आप **उद्धार** *के निकट* हैं। आप **परमेश्वर की सन्तान** होने के *बहुत निकट* हैं[26]–परन्तु अभी तक इन आशिषों में से कोई भी आशीष आप ने पाई नहीं है।

राज्य के साथ हमारा सम्बन्ध

इससे आपके मन में कुछ प्रश्न आ सकते हैं, पर उनका उत्तर देने से पहले, मैं उन में जो **निकट** हैं और उन में जो **दूर** हैं, अंतर करने के लिए कुछ और समय देना चाहता हूं। क्योंकि दोनों ही लोग एक-दूसरे से मिलते नहीं हैं, मैं सामान्य शब्दों में ही बात करूंगा; पर मुझे इन दोनों स्थितियों में सम्भावित अन्तर बताने होंगे।

बहुत से लोग जो राज्य से **दूर** हैं, वे **पूर्वधारणा** से भरे हुए हैं।[27] उन्हें आत्मिक बातों पर विचार करना अच्छा नहीं लगता। वे उस चिह्न की तरह हैं, जो मैंने एक बार पढ़ा था: ''मेरा मन बन चुका है; तथ्य बताकर मुझे उलझाएं नहीं।'' परन्तु साधारण तौर पर, जो राज्य के **निकट** होता है, वह **निष्कपट मन** होता है।[28] शायद यही वह गुण था, जिसकी यीशु ने शास्त्री के मन में देखकर प्रशंसा की थी: उस व्यक्ति में वह पूर्वधारणा नहीं थी, जिससे अधिकतर फरीसियों के मन कठोर हो गए थे।

कुछ लोग **दुष्टता** के कारण राज्य से **दूर** हैं।[29] उन्होंने इस संसार के नैतिक मापदण्डों को अपना लिया है और उन्होंने इसी के बने रहने का मन बना लिया है। दूसरे लोग **निकट**

हैं, क्योंकि उन्हें सही और गलत की समझ है और वे **भला, सदाचारी जीवन** बनाए रखने की कोशिश करते हैं।[30]

कुछ लोग **दूर** हैं, क्योंकि उनमें परमेश्वर की इच्छा के बारे में **शिक्षा की कमी**[31] है। हो सकता है कि उन्हें सीखने का अवसर न मिला हो या उन्हें अवसर तो मिला हो, पर उन्होंने इसका लाभ नहीं उठाया। इसके विपरीत, जो **निकट** होते हैं, वे आम तौर पर **सीखने को उत्सुक** होते हैं;[32] वे परमेश्वर के वचन को जानना चाहते हैं। शायद वे अपने तौर पर सीख रहे हैं; शायद वे दूसरों के साथ जिन्हें उनकी आत्माओं की चिंता करते हैं, अध्ययन कर रहे हैं।

दूर होने वालों की एक विशेष बात **अपने आप में सन्तुष्ट** होना है:[33] ''मैं जैसा भी हूं ठीक हूं; मुझे अकेला छोड़ दो!'' कई साल पहले, मुझ से क्विनलन, टैक्सस में प्रवचनों की एक शृंखला प्रस्तुत करने के लिए कहा गया। मेरे पहुंचने से पहले वहां का स्थानीय प्रचारक उस आदमी से मिलने के लिए गया, जिससे उसे आशा थी कि वह वचन को मान लेगा। जब सुसमाचार प्रचारक ने उस व्यक्ति की आत्मिक स्थिति को जानना चाहा तो उसे बताया गया, ''प्रचारक महोदय, एक मिनट रुकना! आप यहां आकर समय नष्ट कर रहे हैं! यदि आप कुछ देर रुककर मिलना चाहते हैं, तो अपने साथ धर्म को न लाएं। यदि आप धर्म की बात करेंगे, तो रास्ता दूसरी तरफ है!'' तुलना करते हुए, जो लोग **निकट** हैं, वे आम तौर पर अपनी आत्मिक **आवश्यकताओं के प्रति सजग** होते हैं।[34] कई बार वे इस बात से भी अच्छी तरह से वाकिफ होते हैं कि वे खोए हुए हैं और उद्धार के लिए उनका प्रभु के पास आना आवश्यक है।

मैं विरोध सुन रहा हूं: ''वहीं ठहर जाओ! तुम किसी **निष्कपट मन** वाले को जो **भला, सदाचारी जीवन** बिताता है, जो **सुनने को उत्सुक** और आत्मिक **आवश्यकताओं से अवगत** है, की बात कर रहे हो। क्या तुम यह सुझाव दे रहे हो कि ऐसा व्यक्ति *खोया हुआ* हो सकता है?''

काश! ऐसा न होता। मेरी मन से यही इच्छा है–पर मैं किसी और बात को सिखाकर बाइबल के साथ ईमानदारी नहीं कर सकता। राज्य के **निकट** होकर भी व्यक्ति खोया हुआ क्यों होगा? क्योंकि वह **मसीह में** नहीं है, जहां **सब प्रकार की आत्मिक आशिषें** हैं। वह *यीशु के लहू से* धोया नहीं गया है, जिससे उसे उसके पिछले पापों से **छुटकारा** मिल सके। यदि आपको बाइबल में से निकट का उदाहरण चाहिए तो कुरनेलियुस नामक एक रोमी सिपाही को देखें। परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई, इस बात पर ध्यान दें:

> कैसरिया में कुरनेलियुस नामक एक मनुष्य था, जो इतालियानी नामक पलटन का सूबेदार था। वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था (प्रेरितों 10:1, 2)।

इस आदमी के बारे में पढ़ने पर, आप पाएंगे कि उसका **निष्कपट मन** था, वह **भला, सदाचारी** था, **सुनने को उत्सुक** था और यहां तक कि आत्मिक **आवश्यकताओं** के बारे में **भी सजग** था। क्या उसका उद्धार हो गया था? एक स्वर्गदूत ने उसे बताया था कि

''याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना *उद्धार* पाएगा'' (प्रेरितों 11:13, 14)। कुरनेलियुस **निकट,** इतना निकट था, परन्तु उसका उद्धार नहीं हुआ था। इस सूबेदार में प्रशंसा के योग्य बहुत कुछ था, पर फिर भी वह खोया हुआ था।

राज्य में प्रवेश

अगला प्रश्न है ''हम राज्य *में प्रवेश* कैसे करते हैं?'' **राज्य/कलीसिया/देह/मसीह में प्रवेश करने में**[35] क्या होता है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, मैं फिर उन शब्दों से सम्बन्धित पदों पर ध्यान दिलाना चाहता हूं, जिन पर हम ने पहले चर्चा की है।

मत्ती 18:3 में ''राज्य'' शब्द का इस्तेमाल है: यीशु ने कहा ''मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न *फिरो* और बालकों के समान[36] न बनो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।'' **राज्य में प्रवेश करने के लिए, मन फिराव**[37] होना आवश्यक है। ''फिरना'' शब्द का मूल अर्थ ''बदलना'' है। मन परिवर्तन या मन बदलने की प्रक्रिया तिहरी है:

(1) *व्यवहार* में बदलाव आवश्यक है, जो *विश्वास* से आता है। यीशु ने कहा, ''... यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही [मसीहा, परमेश्वर का पुत्र] हूं, तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24)।

(2) *जीवन* में परिवर्तन होना आवश्यक है, जो *मन फिराव* से आता है। उसने कहा, ''मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे'' (लूका 13:3)।

(3) *सम्बन्ध* यानी प्रभु के साथ हमारे सम्बन्ध में परिवर्तन आवश्यक है, जो *बपतिस्मे* से आता है। यीशु ने कहा, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16क)।

बहुत से लोग जो यीशु में विश्वास करते हैं, समझते हैं कि विश्वास और पश्चात्ताप का मन परिवर्तन की प्रक्रिया में होना आवश्यक है, पर कुछ लोग **बपतिस्मे** की आवश्यकता को चुनौती देते हैं।[38] इसलिए मैं राज्य में प्रवेश करने के अपने इस पहलू पर कुछ और पल बात करना चाहता हूं। राज्य के विवरण के लिए हम किसी भी शब्द का चयन करें, हमारे प्रवेश के लिए पानी में बपतिस्मा आवश्यक माना जाता है:

- ''**राज्य**'' शब्द के सम्बन्ध में, यूहन्ना 3:5 पर ध्यान दें, जहां यीशु ने कहा, ''... जब तक कोई मनुष्य *जल और आत्मा से न जन्मे*[40] तो वह परमेश्वर के *राज्य* में प्रवेश नहीं कर सकता।''
- ''**कलीसिया**'' शब्द के सम्बन्ध में, प्रेरितों के काम 2 अध्याय में जाएं। पतरस ने लोगों से कहा, ''मन फिराओ, और ... अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से *बपतिस्मा* '' लो (आयत 38)। फिर, हम पढ़ते हैं, ''... जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया, उन्होंने *बपतिस्मा लिया;* और उसी दिन तीन हज़ार

मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए'' (आयत 41)। आयत 47 कहती है कि ''जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था।'' बपतिस्मा लेने वालों को प्रभु द्वारा उद्धार पाए हुओं के सूमह में अर्थात ''कलीसिया'' में मिला लिया जाता था (इफिसियों 5:23, 25)। पतरस की बात को मानकर बपतिस्मा लेने वालों के विषय में किंग जेम्स वर्ज़न में कहा गया है कि ''the Lord added to the *church* daily such as should be saved'' (प्रेरितों 2:47)।

- ''**देह**'' शब्द के सम्बन्ध में, 1 कुरिन्थियों 12:13क पर ध्यान दें: ''क्योंकि हम सब ने ... एक ही आत्मा के द्वारा एक *देह* होने के लिए *बपतिस्मा लिया*।''
- ''**मसीह में**'' वाक्यांश के सम्बन्ध में, मैं गलातियों 3:26, 27 फिर से दोहराता हूं: ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में *बपतिस्मा लिया* है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।'' एक और पद जिसमें मूलत: इसी सच्चाई को सिखाया गया है, रोमियों 6:3, 4:

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का (में)बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का (में) बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

जब हमारे मन, जीवन तथा सम्बन्ध प्रभु में भरोसा करने के द्वारा बदल जाते हैं, अपने पापों से मन फिराकर और बपतिस्मे में गाड़े जाकर हम बदल जाते हैं, तो क्या परिणाम निकलता है? फिर एक ईश्वरीय **हस्तान्तरण**[41] होता है: परमेश्वर ''हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर'' बचाता है और ''अपने प्रिय पुत्र के **राज्य** में प्रवेश *करा[ता है]*'' (कुलुस्सियों 1:13)! हमें **कलीसिया** में मिलाया जाता है। हम **देह** के अंग बन जाते हैं। हम **मसीह** को पहन लेते हैं!

अब हमें स्पष्ट समझ आ गई होनी चाहिए कि ''**राज्य में**'' वाक्यांश से हमारा क्या अभिप्राय है-और यह भी कि ''**दूर**'' और ''**निकट**'' का क्या अर्थ है। राज्य के बाहर लोग **दूर** हों या **निकट,** बदले नहीं हैं। क्योंकि उनका पवित्र शास्त्र के अनुसार बपतिस्मा नहीं हुआ है, इसलिए वे **राज्य/कलीसिया/देह/मसीह** में लाए नहीं गए हैं। यहीं तो **सब प्रकार की आत्मिक आशिषें** हैं, जिनमें **छुटकारा** और पिछले पापों से **उद्धार** और **परमेश्वर की सन्तान** होने के योग्य बनना शामिल है।

सारांश

मैं पक्का नहीं कह सकता कि कुछ लोग राज्य के **निकट** आकर इस **में** प्रवेश क्यों

नहीं करते। कुछ लोग बाद में आने की योजना बनाते हैं। शायद कुछ लोगों को लगता है कि उन्हें अच्छी तरह पता नहीं है; उनके मन में अभी भी प्रश्न हैं। दूसरों को शायद लगता है कि वे अभी बहुत छोटे हैं या बहुत बूढ़े हो गए हैं।

पर पवित्र शास्त्र से और लोगों के साथ वर्षों की संगति से मैं आपको यह बता सकता हूं कि कोई भी **निकट** नहीं *रहता* है। मेरी बात सुनो: निकट कोई नहीं *रहता* है। निकट आने वाला या तो राज्य में प्रवेश कर जाता है या उससे दूर चला जाता है। जितनी बार वह अवसर को ठुकराता है, उसका मन कठोर होता रहता है। राज्य से एक बार **दूर** हो जाने पर, उसके लिए पहले वाली रुचि को फिर से पैदा करना असम्भव सा हो जाता है। यदि कोई परमेश्वर की ओर आगे बढ़ने और राज्य में आने की दिशा में बना नहीं रहता तो **निकट** होने का कोई लाभ नहीं है!

मैं हर किसी को, जिसे भी प्रभु को स्वीकार करने की आवश्यकता है, चाहे वह भटका हुआ मसीही हो, जिसे घर वापसी की आवश्यकता हो और चाहे वे जो दूसरे कारणों से प्रार्थना की इच्छा करते हैं, निमन्त्रण देता हूं।[43] मैं *विशेष तौर पर* किसी भी उस व्यक्ति को जिसे राज्य के *निकट* होना चाहिए, विनती करता हूं। इस बात को समझें कि आप वहां पर अधिक देर तक खड़े नहीं रह सकेंगे। जब-जब पौलुस ने फेलिक्स के साथ ''धर्म और संयम और आने वाले न्याय की चर्चा'' की तो यह राज्यपाल ''भयमान हो'' गया था (प्रेरितों 24:25क)। वह राज्य के थोड़ा और निकट आया था-पर फिर दूर चला गया। उसने इस प्रेरित को बताया था, ''अभी तो जा: अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊंगा'' (प्रेरितों 24:25ख)। जब पौलुस ने अग्रिप्पा को वचन सुनाया था, तो उस राजा ने उससे कहा था, ''तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?'' (प्रेरितों 26:28); परन्तु यदि उसके मन पर असर हुआ था, तो उसने इसकी मानी तो नहीं।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि **निकट** आने वाला हर व्यक्ति **दूर** नहीं जाता। कुरनेलियुस का उल्लेख मैंने एक उदाहरण के रूप में किया था, जो **निकट** आकर खोया नहीं था। प्रेरितों 10:1-11:18 में उसके मनपरिवर्तन की कहानी है, जिसमें मसीह में उसके विश्वास करने (प्रेरितों 10:43) और बपतिस्मा लेने (प्रेरितों 10:48) के बारे में बताया गया है। एक और रोमांचकारी उदाहरण इथोपिया के मंत्री का है, जिसकी कहानी प्रेरितों 8:26-39 में बताई गई है। **निकट** होने का हमारा हर शब्द उस पर लागू होगा: वह **निष्कपट मन** था; हम मान सकते हैं कि वह **भला, सदाचारी जीवन** बिता रहा था; वह **सीखने को उत्सुक** था; और वह आत्मिक **आवश्यकताओं के प्रति सचेत** था। फिलिप्पुस द्वारा उसे समझाने के बाद (आयत 35) उसने कहा था, ''देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?'' (आयत 36)। इवैंजलिस्ट अर्थात सुसमाचार के प्रचारक ने उसे बताया था, ''[यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है]'' (आयत 37क)। वहां पर उस अधिकारी को या तो आगे बढ़ना था या पीछे; वह वहीं पर जहां वह था, नहीं रह सकता था। मुझे यह बताना अच्छा लगता है कि उसने यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार किया (आयत 37ख) और बपतिस्मा लिया था (आयत 38)। जब कुरनेलियुस और खोजा

निर्णय लेकर **राज्य में, कलीसिया में, देह में मसीह में** आ गए थे और **सब प्रकार की आत्मिक आशिषें** पाने के योग्य हो गए थे।

निकट आने वाले उस शास्त्री का क्या हुआ था? क्या उसने यीशु को मसीहा मान लिया था? पिन्तेकुस्त के दिन क्या उसने मन फिराया था? क्या उसने बपतिस्मा लिया था? पता नहीं, पर इससे भी महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि ''*आप* कहां हैं?'' शायद आप **निकट** हैं। यदि ऐसा है, तो क्या आप प्रभु के लिए वह निर्णायक निर्णय लेने को तैयार हैं ताकि, उस खोजे की तरह आप भी आनन्द करते हुए लौट जाएं? निर्णय लेना आपके हाथ में है।

टिप्पणियां

[1]इस प्रस्तुति के साथ ''तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं'' का चार्ट इस्तेमाल किया जा सकता है। चार्ट का इस्तेमाल करना चुनने वालों की सहायता के लिए, प्रवचन में यह संकेत देने के लिए कि चार्ट में कब नये शब्द या वाक्यांश जोड़े जाएं या पहले से लगाए गए शब्दों पर कब ध्यान दिया जाए, *बड़े अक्षरों* का इस्तेमाल किया गया है। *टिप्पणियां* संकेत देती हैं कि चार्ट में कब कोई शब्द या वाक्यांश *जोड़ा* जाए। यदि कोई टिप्पणी *नहीं* मिलती, तो बड़े किए गए अक्षर चार्ट के शब्दों की ओर *ध्यान दिलाते* हैं। पाठ के आरम्भ में ही बोर्ड के ऊपर शीर्षक लगा दिया जाए, बोर्ड के दाईं ओर के आयताकार के साथ। [2]प्रश्नों के बड़े दिन पर पृष्ठभूमि के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 5'' में पृष्ठ 105 पर ''क्या दिन है!'' पाठ देखें। विचाराधीन स्पष्ट घटना की पृष्ठभूमि के लिए उसी पुस्तक में पृष्ठ 129 पर ''विजयी ... और अब भी चैम्पियन'' पाठ देखें। [3]उसने अपनी इच्छा से किया हो सकता है। [4]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मार्क,* संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 256-57. [5]**''राज्य''** शब्दों को चार्ट पर ऊपरी सिरे के पास आयताकार में रखें। [6]यीशु ने कहा कि राज्य उसके कुछ चेलों के जीवनकाल में सामर्थ के साथ आएगा (मरकुस 9:1)। उसने कहा कि पवित्र आत्मा के आने पर सामर्थ आएगी (प्रेरितों 1:8)। पवित्र आत्मा मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने तथा जी उठने के बाद पहले पिन्तेकुस्त पर आया (प्रेरितों 2:1-4)। उस अवसर पर सामर्थ आई और राज्य स्थापित हुआ। [7]**''निकट''** शब्द को दर्शाए गए स्थान पर रखें। [8]**''दूर''** शब्द को चार्ट पर लगाएं। [9]**''में''** शब्द को आयताकार के निकट **''राज्य''** शब्दों के सामने जोड़ें। [10]जैसा कि बाद में हम इस प्रवचन में देखेंगे, मैं मसीही लोगों अर्थात प्रभु की कलीसिया के लोगों की बात कर रहा हूं।

[11]नये नियम में स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन या पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर के अधिकार को बताने के लिए ''राज्य'' शब्द का इस्तेमाल कई प्रकार से किया जाता है। हम जिन आयतों का इस्तेमाल करेंगे, वे लोगों के समूह के लिए हैं, जिसे आम तौर पर पिन्तेकुस्त के दिन के बाद से ''कलीसिया'' कहा जाता है। [12]मत्ती 16:13-20 पर संक्षिप्त टिप्पणियों के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 3'' में ''पहाड़ों की चोटियां और घाटियां'' पाठ देखें। [13]इस बात को समझें कि चर्च या कलीसिया इमारत *नहीं,* बल्कि एक लोग हैं। यह रूपक या उदाहरण है, जिसका इस्तेमाल यीशु ने किया है। [14]यह मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद के पहले पिन्तेकुस्त के दिन हुआ (प्रेरितों 2:14-40)। [15]**''राज्य में''** शब्दों के नीचे **''कलीसिया में''** शब्द जोड़ लें। [16]**''कलीसिया में''** शब्दों के नीचे **''देह में''** शब्दों को जोड़ लें। [17]**''देह में''** शब्दों के नीचे **''मसीह में''** शब्दों को जोड़ लें। [18]अन्य उदाहरणों के लिए, आप किसी अनुक्रमणिका (कंकॉर्डैंस) में ''मसीह में,'' ''यीशु में,'' ''यीशु मसीह में'' और ''मसीह यीशु में'' शब्द देख सकते हैं। [19]चार्ट में ''सब प्रकार की आत्मिक आशीष'' शब्द जोड़ लें। [20]चार्ट में **''छुटकारा''** शब्द जोड़ें।

[21]चार्ट में **''उद्धार''** जोड़ें। [22]चार्ट में **''परमेश्वर की संतान''** शब्द जोड़ें। [23]इस प्रवचन में दोहराना जान बूझकर किया गया है: ''सीखने का सबसे अच्छा ढंग दोहराना है।'' [24]आयताकार के बाहर के क्षेत्र की

ओर इशारा करें। [25]''**मसीह में**'' शब्दों की ओर और आयताकार क्षेत्र के अन्दर ध्यान दिलाएं। [26]''**परमेश्वर की संतान**'' शब्दों की ओर ध्यान दिलाएं यद्यपि उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया गया। [27]चार्ट में ''**पूर्वधारणा**'' शब्द जोड़ें। मैं इन बिंदुओं में जल्दी से अन्तर कर देता हूं। आपको इन पर कुछ समय बिताएं। पूर्वधारणा से जुड़ी एक आयत (सच्चाई से प्रेम नहीं) 2 थिस्सलुनीकियों 2:10. [28]चार्ट में ''**निष्कपट मन**'' शब्द जोड़ लें। निष्कपट मन होने से जुड़ी आयतों में मत्ती 5:6; यूहन्ना 7:17; प्रेरितों 10:33; 1 शमूएल 3:9 हैं। [29]चार्ट में ''**दुष्टता**'' शब्द जोड़ें। [30]चार्ट में ''**भला, सदाचारी जीवन**'' शब्द जोड़ें।

[31]चार्ट में ''**शिक्षा की कमी**'' शब्द जोड़ें। [32]चार्ट में ''**सीखने को उत्सुक**'' शब्द जोड़ें। [33]चार्ट में ''**अपने आप में संतुष्ट**'' शब्द जोड़ें। [34]चार्ट में ''**आवश्यकताओं के प्रति सजग**'' शब्द जोड़ें। लूका 18:9–14 एक आदमी के बारे में बताता है, जो अपने आप में संतुष्ट था और एक दूसरा आदमी जो अपनी आवश्यकताओं के प्रति सजग था। [35]तीर को **राज्य** के आयताकार में जाता दिखाने के साथ, चार्ट में ''**प्रवेश करने के लिए**'' वाक्यांश जोड़ें। [36]''**संतान जैसे बनना**'' के अर्थ के सम्बन्ध में ''मसीह का जीवन, भाग 4'' में ''चेला होने के चिह्न'' पाठ पर विचार करें। [37]चार्ट में ''**मन परिवर्तन**'' शब्द जोड़ें। [38]चार्ट में ''**बपतिस्मा**'' शब्द जोड़ें। [39]इस तथ्य पर कि ''जल से जन्म'' का अर्थ बपतिस्मा है, संक्षिप्त चर्चा के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 1'' में ''सब बातों का पहली बार'' पाठ देखें। [40]1 कुरिन्थियों 12:13 का बपतिस्मा ग्रेट कमीशन का बपतिस्मा अर्थात इफिसियों 4:5 का ''एक बपतिस्मा'' है, जो कि पानी में ही है। आत्मा की अगुआई में (परमेश्वर की प्रेरणा से दिए वचन को मानकर), हम एक देह अर्थात कलीसिया में बपतिस्मा लेते हैं।

[41]चार्ट पर ''**हस्तान्तरण**'' शब्द लगाएं। [43]इसे अपने सुनने वालों की आवश्यकता के अनुसार बढ़ा लें।